पाठ-13

लोक संस्कृति और नर्मदा

– **अमृतलाल बेगड़**

आइए सीखें

■ लोक संस्कृति से परिचय ■ नदियों का महत्व ■ विकारी एवं अविकारी शब्द ■ समानार्थी शब्द ■ वाक्य प्रयोग।

संस्कृति की कहानी मनुष्य और नदी की जुगलबंदी की कहानी है। संसार की सभी प्रमुख संस्कृतियों का जन्म नदियों की कोख से हुआ। भारतीय संस्कृति गंगा की देन है पर एक बात है–श्रेष्ठ गंगा है लेकिन ज्येष्ठ नर्मदा है। जब हिमालय नहीं था; विन्ध्य और सतपुड़ा तब भी थे। विन्ध्य तो शायद भारतभूमि का सबसे पुराना प्रदेश है। नर्मदा का प्रदेश सौंदर्य की दृष्टि से अद्वितीय है। आदिम संस्कृतियों का भंडार है। गिरि, जन और वनजातियों की प्राचीन लीला भूमि है।

कभी नर्मदा तट पर दंडकारण्य जैसे घने वनों की भरमार रही। इन्हीं वनों के कारण वैदिक आर्य तो नर्मदा तक पहुँचे ही नहीं। जो आए, वे भी इन वनों को पारकर दक्षिण में जाने का साहस न कर सके। उन दिनों नर्मदा आर्यावर्त की सीमा रेखा थी। नर्मदा तट पर आर्यावर्त या उत्तरापथ समाप्त होता था और दक्षिणापथ शुरू होता था।

नर्मदा तट पर मोहनजोदड़ो या हड़प्पा जैसी नगर संस्कृति नहीं रही, लेकिन एक आरण्यक संस्कृति अवश्य रही। भारतीय संस्कृति मूलत: आरण्यक संस्कृति है। नर्मदा के तटवर्ती वनों में मार्कण्डेय, भृगु, कपिल, जमदग्नि आदि अनेक ऋषियों के आश्रम रहे। ऋषियों का कहना था कि तपस्या तो बस नर्मदा तट पर ही करना चाहिए। इसी के तट पर सुदूर केरल के शंकर ने दीक्षा ली थी और इसी के तट पर मंडन मिश्र और शंकराचार्य का सुप्रसिद्ध शास्त्रार्थ हुआ था।

जिस प्रकार राम की कथा उत्तर और दक्षिण भारत को जोड़ती है, कृष्ण की कथा पूर्व और पश्चिम भारत को जोड़ती है, उसी प्रकार नर्मदा भी देश को जोड़ने का एक सूत्र है। नर्मदा तट पर उत्तर के आर्यों

शिक्षण संकेत

▸ छात्रों को किसी पर्यटन स्थल पर ले जाएँ व उस स्थल के बारे में जानकारी दें ▸ 'लोक संस्कृति' से छात्रों को परिचित कराएँ ▸ अपने आस-पास की नदियों के विषय में छात्रों को जानकारी दें ▸ नदियों और मनुष्य के संबंधों को स्पष्ट करें।

की विचारप्रधान संस्कृति और दक्षिण के द्रविड़ों की आचार प्रधान संस्कृति का समन्वय हुआ था। यहाँ विक्रम संवत और शालिवाहन शक संवत दोनों का प्रचलन था।

भारत की अधिकांश नदियाँ पूर्व की ओर बहती हैं। बड़ी नदियों में एक नर्मदा ही है जो पश्चिम की ओर बहती है। अमरकंटक में नर्मदा और सोन का उद्‌गम पास-पास है, लेकिन दोनों बिलकुल विपरीत दिशाओं में बहती हैं। कहते हैं नर्मदा और सोन (यानि शोणभद्र, जिसे नद माना गया है) का विवाह होने वाला था पर सोन नर्मदा की दासी जुहिला पर ही आसक्त हो बैठा तो नर्मदा नाराज हो गई। कभी विवाह न करने के संकल्प के साथ पश्चिम की ओर चल दी। लज्जित शोण पूर्व की ओर गया। नर्मदा चिर कुमारी कहलाई। इसीलिए भक्तगण नर्मदा को अत्यंत पवित्र मानते हैं और उसकी परिक्रमा करते हैं। नर्मदा की महत्ता उसकी परिक्रमा से ही सिद्ध हो जाती है। हमारे पुराणों में गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती आदि नदियों का चाहे जितना महात्म्य बताया गया हो; कोई भक्त इन नदियों की परिक्रमा नहीं करता। घर की तमाम सुख सुविधा छोड़कर एक ही नदी की सवा तीन वर्ष में परिक्रमा पूरी करना-इस व्रत में एक प्रकार की वीरता है। यह गरीबों के साथ एकरूप होने की भावना है। प्रकृति के सान्निध्य में रहने की ललक है और है अंतर्मुख होकर प्रभु से लौ लगाने की आकांक्षा।

नर्मदा तट पर कभी शक्तिशाली आदिम जातियाँ निवास करती थीं। आज भी नर्मदा तट पर बैगा, गौंड, भील आदि माटी से जुड़ी जनजातियाँ निवास करती हैं। ये अशिक्षित जरूर हैं लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि वे संस्कृति सम्पन्न नहीं है। इनकी जीवन शैलियों, नृत्यों तथा गीतों ने दूर-दूर के लोगों को आकर्षित किया है। गौंड, भील और बैगा स्त्रियों को गुदनों से बड़ा लगाव होता है। बैगा स्त्रियों के शरीर तो गुदनों से छलकते हैं। गुदने इनके लिए परिधान की तरह हैं। इन स्त्रियों को गीतों से भी बड़ा लगाव होता है। प्राय: वे कोई-न-कोई गीत गुनगुनाती रहती हैं।

इन लोकगीतों की रचना किसने की?

इसका उत्तर हम नहीं जानते। किसी एक आदमी ने नहीं बल्कि सैकड़ों पीढ़ियों ने इन गीतों को जन्म दिया है। तब लोग हर काम मिलकर किया करते थे और गीतों की रचना भी पीढ़ियों के प्रयासों से हुई। गायक ने अपने गीत की रचना नहीं की, उसने जो सुना उसे औरों को दिया, लेकिन एक गायक से दूसरे गायक तक आते-आते गीत बदलते चले गए। गायक पुरानी पीढ़ियों से प्राप्त गीत में परिवर्तन करते समय भी स्वयं को उस गीत का रचयिता नहीं मानता था। चाहे लोकगीत हो या लोकथाएँ या और कुछ; लोक संस्कृति समूह का सृजन होती है। कोई एक इसे नहीं बनाता, लेकिन कालांतर में आदमी 'मैं' शब्द का अधिक उपयोग करने लगा। 'हम' की जगह 'मैं' ने ले ली। यहीं लोक संस्कृति समाप्त हुई और नागर संस्कृति का जन्म हुआ। नागर संस्कृति का महल लोक संस्कृति की नींव पर ही खड़ा हुआ है। जिस प्रकार एक नदी कितने ही झरनों से पुष्ट होती है, उसी प्रकार महाकाव्य इन प्रारंभिक गीतों से ही विकसित हुआ होगा। बहुत संभव है, कालिदास ने 'मेघदूत' या 'ऋतुसंहार' की रचना पहले से चले आ रहे किसी लोकगीत के आधार पर ही की हो। यह बिलकुल संभव है कि कोई महाकवि किसी पुराने गीत को बीज की तरह

ले और उसका एक विशाल वृक्ष में रूपांतर कर दे।

लोक संस्कृति की दूसरी विशेषता है उसकी सादगी; उसकी सरलता। सरल को जटिल बना देना आम बात है, पर जटिल को सरल बनाना बहुत कठिन है। लोककला में कहीं कोई आडंबर नहीं होता। कोई बनाव-सिंगार नहीं होता। सहज हृदय से सहज रूप में प्रवाहित कला बड़ी बलवती और बड़ी तेजस्वी होती है। हमें प्रभावित करने की उसमें अपार शक्ति होती है।

समूचा नर्मदा-तट मंदिरों और देवालयों से भरा है। प्रत्येक तीर्थ किसी पौराणिक आख्यान से जुड़ा है। इन देवालयों और घाटों में सुबह-शाम आरती का स्वर या शंख की ध्वनि गूंजती है। कहीं कथा-वार्ता या भजन-कीर्तन का स्वर लहराता है, या कहीं कोई भक्त 'त्वदीय पाद पङ्कजं नमामि देवि नर्मदे' का स्तोत्र पाठ करता है। गेरुए वस्त्र पहने साधु या दंड-कमंडल लिए संन्यासी या नर्मदा तट पर भरने वाले असंख्य मेले भी यहाँ की लोक संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। शिवरात्रि या कार्तिक पूर्णिमा पर समूचा नर्मदा तट ओर-से-छोर तक हजारों मेले और मड़ई से गूँज उठता है। हँसते चहकते लोगों के दल के दल इन मेलों में उमड़ते हैं। गाँव के कठोर जीवन में ये मेले रस घोलते हैं। इन मेलों के कारण ग्रामीण जनता एकसूत्र में बँधती है। दूर-दूर के ग्रामीण 'नर्मदा मैया की जय' बोलते हुए आते हैं और पवित्र नर्मदा-जल अपने साथ ले जाते हैं।

नर्मदा तट का निवासी नित्य पूजा-पाठ करता है। इनके कई अनुष्ठान बड़े काव्यात्मक होते हैं, जैसे पर्व-त्योहार पर किया जाने वाला दीपदान। रात को अँधेरे में जब महिलाएँ दीप प्रज्ज्वलित करके नर्मदा में प्रवाहित करती हैं, तब उन दीपों का केसरिया उजाला कितना मोहक लगता है! नर्मदा तट के घाटों की शोभा का क्या कहना। होशंगाबाद और महेश्वर के घाट हमारे देश के सर्वोत्तम घाटों में से हैं। सुबह से लेकर शाम के अँधेरों तक इन घाटों पर लोगों की भीड़ बनी रहती है। यहाँ गाँव की महिलाएँ अपनी सहेलियों के साथ अपना सुख-दुख बाँटती हैं।

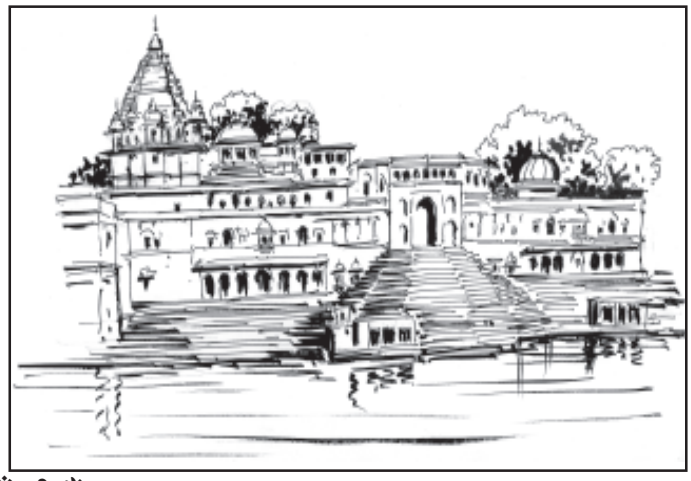

प्रकृति पर मनुष्य का प्रभाव निरंतर बढ़ता जा रहा है। प्रकृति को वश में करने में मनुष्य ने अभूतपूर्व सफलताएँ पा ली हैं। पहाड़ टूटते हैं, नदियाँ अपना स्वरूप बदलती हैं, बाँध बनते हैं, विशाल जलाशय प्रकट होते हैं और नहरों का जाल बिछ जाता है। बंजर ज़मीन हरे-भरे खेतों में बदल जाती है, लेकिन यह भी सच है कि संस्कृति के सम्पर्क में आने पर प्रकृति अपनी स्थिरता खो रही है। प्रकृति का परिष्कार करने से संस्कृति का जन्म हुआ। लेकिन अब संस्कृति को चाहिए कि वह प्रकृति की रक्षा करे। उसे नष्ट होने से बचाए। प्रकृति से हम केवल लेंगे ही नहीं, देंगे भी। नर्मदा को प्रदूषित होने से बचाएँगे। वनों का विनाश नहीं होने देंगे। प्राकृतिक परिवेश की रक्षा हमारे युग की सबसे बड़ी माँग है।

शब्दार्थ

जुगलबन्दी=तालमेल। **कोख**=गोद। **ज्येष्ठ**=बड़ी। **श्रेष्ठ**=उत्तम। **आदिम**=प्राचीन। **गिरि**=पर्वत। **आर्यावर्त**=भारत वर्ष। **आरण्यक**=वनों से संबंधित। **आसक्त होना**=प्रेम हो जाना, मोहित हो जाना। **महात्म्य**=प्रसिद्धि, महानता। **सान्निध्य**=निकटता, समीपता। **अन्तर्मुख**=भीतर की ओर। **सृजन**=निर्माण, रचना। **नागर संस्कृति**=शहरी संस्कृति। **आडम्बर**=दिखावा। **अनुष्ठान**=आयोजन, धार्मिक कार्य। **काव्यात्मक**=भावना प्रधान। **जलाशय**=तालाब। **बंजर जमीन**=जिस ज़मीन पर खेती नहीं होती है। **प्राकृतिक परिवेश**=प्रकृति जो हमारे चारों ओर है, प्रकृति का घेरा।

अनुभव विस्तार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. (क) सही जोड़ी बनाइए—

- श्रेष्ठ गंगा है – देश के सर्वोत्तम घाटों में से है
- प्राकृतिक परिवेश की रक्षा – वह प्रकृति की रक्षा करे
- होशंगाबाद और महेश्वर के घाट – लेकिन ज्येष्ठ नर्मदा है
- संस्कृति को चाहिए – हमारे युग की सबसे बड़ी माँग है

(ख) दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

- भारतीय संस्कृति मूलत: ..... संस्कृति है। (आरण्यक/नागर)
- नर्मदा ..... की ओर बहती है। (पूर्व/पश्चिम)
- प्रकृति को वश में करने में मनुष्य ने अभूतपूर्व ..... पा ली है। (सफलता/विफलता)
- नर्मदा तट की जनजातियाँ ..... जरूर हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि वे संस्कृति सम्पन्न नहीं है। (अशिक्षित/शिक्षित)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए—

(क) संसार की सभी प्रमुख संस्कृतियों का जन्म कहाँ हुआ?

(ख) प्राचीन समय में आर्यावर्त्त की सीमा रेखा क्या थी?

(ग) गौंड़, भील, बैगा स्त्रियों को किस चीज़ से लगाव होता है?

(घ) ग्रामीण जनता के एक सूत्र में बँधने का क्या कारण है?

(ङ) प्रकृति अपनी स्थिरता क्यों खो रही है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-से-पाँच वाक्यों में दीजिए—

(क) 'भारतीय संस्कृति को आरण्यक संस्कृति क्यों कहा गया है?

(ख) 'नर्मदा चिरकुमारी है' इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

(ग) लोक गीतों की रचना किस प्रकार हुई?

(घ) नर्मदा तट के सौन्दर्य का वर्णन कीजिए।

(ङ) संस्कृति के विकास में नदियों का महत्व लिखिए।

भाषा की बात

4. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए—

ऋषि, संस्कृति, आरण्यक, दंडकारण्य, समन्वय

5. निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए—

स्रेष्ठ, परिकरमा, इस्त्रियाँ, रचइता, परिस्कार, प्रदूसित

6. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

बंजर, मोहक, सृजन, प्रधान, हृदय

7. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द बताइए—

गिरि, परिधान, गंगा, तट, भूमि, नदी।

8. नीचे लिखे शब्दों के अन्त में 'ई' की मात्रा लगाकर शब्द बनाइए—

संन्यास	–	संन्यासी
साहस	–	.....
पश्चिम	–	.....
नागर	–	.....
निवास	–	.....
पहाड़	–	.....

ध्यान दीजिए

- वह पुस्तक पढ़ता है। उसने पुस्तक पढ़ी थी।
- जन-जातियों की सैकड़ों पीढ़ियों ने लोक गीतों को जन्म दिया है।
- नर्मदा तट के निवासी नित्य पूजा पाठ करते हैं।

उपर्युक्त रेखांकित 'उसने' शब्द 'वह' सर्वनाम शब्द का एकवचन में परिवर्तित रूप है। 'सैकड़ों' 'सैकड़ा' विशेषण शब्द का बहुवचन रूप है। 'पीढ़ियों' और 'गीतों' 'पीढ़ी' और 'गीत' संज्ञा शब्दों के बहुवचन रूप हैं। 'करते हैं' 'करना' क्रिया का वर्तमान कालिक बहुवचन रूप है।

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया शब्द लिंग, वचन, कारक आदि के अनुसार परिवर्तित होने के कारण 'विकारी' शब्द कहलाते हैं।

निम्नलिखित वाक्यों को भी पढ़िए—

- गोपाल धीरे-धीरे चलता है।
- प्रिया अपनी माँ के साथ बाजार जाती है।
- अरे! यह कैसे हो गया?
- आदित्य ने परिश्रम नहीं किया; इसलिए असफल हो गया।
- चारों ओर सूर्य का प्रकाश फैल गया।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित 'धीरे-धीरे', 'के साथ', 'अरे!' 'इसलिए', 'ओर' शब्द लिंग, वचन, कारक आदि के कारण परिवर्तित नहीं होते हैं। इसलिए ये 'अविकारी शब्द' कहलाते हैं।

इन्हें भी जानिए

अविकारी शब्द के प्रकार निम्नानुसार हैं—

क्रिया विशेषण अविकारी शब्द	:	जोर-जोर, अधिक, थोड़ा, लगातार आदि।
संबंधबोधक अविकारी शब्द	:	के साथ, के अन्दर, के ऊपर, के पीछे आदि।
समुच्चय बोधक अविकारी शब्द	:	या, ओर, परंतु, इसलिए आदि।
विस्मयादि बोधक अविकारी शब्द	:	ओह! आह! वाह! अरे! आदि।

9. दिए गए वाक्यों में से विकारी एवं अविकारी शब्द छाँटिए—

1. हमें प्रतिदिन परिश्रम करना चाहिए।
2. छात्र भलीभाँति काम नहीं कर सकता।
3. आह! कैसा सुन्दर दृश्य है।
4. मयंक को साथियों के साथ मिलकर रहना चाहिए।
5. सूर्यकांत बीमार पड़ गया; इसलिए स्कूल नहीं गया।

अब करने की बारी

- मध्यप्रदेश के मानचित्र में नर्मदा नदी खोजिए। उसके किनारे के मुख्य शहर और स्थानों को देखिए और उनके नाम लिखिए।
- नर्मदा परिक्रमा के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।
- नर्मदा पर जो बाँध बन रहे हैं, उनकी जानकारी प्राप्त कीजिए।
- नर्मदा के आध्यात्मिक महत्व पर पाँच वाक्य लिखिए।

❑❑